कालोऽहम्
(मैं समय हूँ)

(1)

कालोऽहम्। अहं खलु कालः। विश्वस्य आत्माऽहम्। कलयामि गणयामि जगतः आयुःप्रमाणम्। सततं चक्रवत् परिवर्तमानः भूतं वर्तमानं भविष्यदपि च वीक्षमाणः अहमेव साक्षी जगतः उत्पत्तेः विकासस्य प्रलयस्य च। इदम् जगत् तु पुनः पुनः जायते विलीयते च परमहं सर्वदा विद्यमानोऽस्य सर्वं क्रियाकलापं पश्यामि। अहो! किं जानीथ यूयम्, 'कियती प्राचीना इयम् सृष्टिः!' नैव! तर्हि श्रृणुत ध्यानेन।

हिंदी अनुवाद (Hindi Translation)

मैं समय हूँ। मैं निश्चित रूप से समय हूँ। मैं विश्व की आत्मा हूँ। मैं संसार की आयु के प्रमाण को गिनता हूँ। इसका आकलन करता हूँ। हमेशा पहिए के समान घूमता हुआ भूत, वर्तमान और भविष्य को देखते हुए मैं ही संसार की उत्पत्ति, विकास और प्रलय का गवाह हूँ। यह संसार तो बार-बार उत्पन्न होता है और नष्ट होता है परन्तु मैं हमेशा विद्यमान रहता हुआ इसके सारे क्रियाकलापों को देखता हूँ। अहो! क्या तुम जानते हो "यह सृष्टि (रचना) कितनी प्राचीन है?" यदि नहीं जानते हो तो ध्यान से सुनो।

शब्दार्थाः (Word-meanings Sanskrit to Sanskrit, Hindi and English)

कलयामि–गणयामि, गिनता हूँ (Count)। **वीक्षमाणः**–सम्यक् पश्यन्, भली प्रकार देखते हुए (While watching carefully)। **विलीयते**–विलीनं भवति, समा जाती है (Dissolves)।

समासाः (Compounds)

आयु प्रमाणम् – आयुषः प्रमाणम् (षष्ठी तत्पुरुषः)। क्रियाकलापम् – क्रिया च कलापम् च (द्वन्द्वः)।

सन्धि-विच्छेदः (Disjoin Sandhi)

आत्माऽहम् – आत्मा + अहम् (पूर्वरूप सन्धिः)। भविष्यदपि – भविष्यत् + अपि (व्यंजन सन्धिः)।
विद्यमानोऽस्य – विद्यमानः + अस्य (विसर्ग सन्धिः)। नैव – न + एव (वृद्धि सन्धिः)।

प्रत्ययाः (Suffixes)

परिवर्तमानः– परि + वृत् + शानच्। कियती – कियत् + ङीप्। वीक्षमाणः – वि + ईक्ष् + शानच्।
साक्षी – साक्ष + इन्। प्राचीना – प्राचीन + टाप्। विद्यमानः – विद् + शानच्।

प्रश्नाः (Questions)

(I) एकपदेन उत्तरत–

(i) अत्र वक्ता कः? (ii) कः चक्रवत् परिवर्तमानः अस्ति?

(II) पूर्णवाक्येन उत्तरत–

(i) कालः कस्य साक्षी? (ii) विश्वस्य आत्मा कः?

(III) भाषिककार्यम्–

(i) 'जायते' पदस्य विपर्ययपदं किम्?
(क) नश्यति (ख) लीयते (ग) विलीयते (घ) उद्भवती

(ii) 'कियती प्राचीना इयम् सृष्टिः' इत्यस्मिन् वाक्ये विशेष्यपदं किम्?
(क) सृष्टिः (ख) कियती (ग) इयम् (घ) प्राचीना

(iii) 'गणयामि' इति पदस्य पर्यायपदं किम्?
(क) जानामि (ख) नयामि (ग) कलयामि (घ) यामि

(iv) 'जायते' इति क्रियायाः कर्तृपदं किम्?
(क) प्रलयं (ख) जगत् (ग) सृष्टिः (घ) संसारः

www.dreamtopper.in

(v) 'अहम्' इति सर्वनामपदस्य प्रयोग: कस्मै अभवत्?

(क) जगते (ख) सृष्ट्यै (ग) जगताय (घ) कालाय

(vi) 'निरन्तरम्' इति अर्थे किं पदं प्रयुक्तम्?

(क) सततम् (ख) क्षणम् (ग) अक्षुण्यम् (घ) कदाचित्

उत्तराणि– (I) (i) काल: (ii) काल:।

(II) (i) काल: जगत: उत्पत्ते: विकासस्य प्रलयस्य च साक्षी। (ii) काल: विश्वस्य आत्मा वर्तते।

(III) (i) (ग) विलीयते (ii) (क) सृष्टि: (iii) (ग) कलयामि (iv) (ख) जगत् (v) (घ) कालाय (vi) (क) सततम्।

प्रश्ननिर्माणम्– (i) अहं खलु **काल:**।

(ii) अहमेव **जगत:** उत्पत्ते:, विकासस्य, प्रणयस्य च साक्षी अस्मि।

(iii) तर्हि श्रृणुत **ध्यानेन**।

(iv) **विश्वस्य** अहम् आत्मा।

उत्तराणि–(i) क: (ii) कस्य (iii) कथम् (iv) कस्य।

(2)

'कृतयुगं त्रेतायुगं द्वापरयुगं कलियुगञ्चेति चत्वारि युगानि। चतुर्णां युगानां समूह: एव महायुगम्। एकसप्ततिमहायुगानाम् एकम् मन्वन्तरम्। चतुर्दशमन्वन्तराणां समूह: कल्प:। एक: कल्प एव ब्रह्मण: एकं दिनं मन्यते। ब्रह्मण: आयु: शतं वर्षाणि।'

अहो! श्रूयते शंखध्वनि:! युगादिपर्वणि कस्मिंश्चिद् गृहे नूतनसंवत्सरस्य अभिनन्दनसमारोह: आयोज्यते। अद्य कलियुगं तु द्विपञ्चाशत्तमं शतकं प्रविशति। तदैव समारोहारम्भे कश्चन विद्वान् सङ्कल्पवाचनं करोति–

हिंदी अनुवाद (Hindi Translation)

सतयुग, त्रेतायुग, द्वापरयुग और कलियुग ये चार युग हैं। चारों युगों का समूह ही महायुग होता है। इकहत्तर महायुगों का एक मन्वन्तर होता है। चौदह मन्वन्तरों का समूह एक कल्प कहलाता है। एक कल्प ही ब्रह्मा का एक दिन माना गया है। ब्रह्मा की आयु सौ वर्ष मानी जाती है।

अहो, शंख ध्वनि सुनी जा रही है। युगारम्भ के पर्व पर किसी घर में नववर्ष का अभिनन्दन समारोह आयोजित किया जा रहा है। आज कलियुग बावनवीं सदी में प्रवेश कर रहा है। तभी समारोह के आरम्भ में कोई विद्वान संकल्पवाचन कर रहा है।

www.dreamtopper.in

शब्दार्था: (Word-meanings Sanskrit to Sanskrit, Hindi and English)

कल्प:–संवर्त:, सृष्टि का अन्त (End of the world)। **कृतयुगम्**–सतयुगम्, सतयुग (Period of truth)। **युगादि पर्वणि**–युगारम्भस्य उत्सवे युगारम्भ के उत्सव में (नए वर्ष के शुरू में) (In the festival of the new year)।

सन्धि-विच्छेद: (Disjoin Sandhi)

कलियुगञ्चेति – कलियुगम् + च (परसवर्ण सन्धि:) + इति (गुणसन्धि:)।

कस्मिंश्चिद् – कस्मिन् + चिद् (अनुस्वार सन्धि:)।

मन्वन्तराणाम् – मनु + अन्तराणाम् (यण् सन्धि:)।

तदैव – तदा + एव (वृद्धि सन्धि:)।

कश्चन – क: + चन (विसर्ग सन्धि:)

शंखध्वनि: – शंखस्य ध्वनि: (षष्ठी तत्पुरुष:)।

समासा: (Compounds)

महायुगम् – महत् युगम् (कर्मधारय:)।

अभिनन्दनसमारोह: – अभिनन्दनस्य समारोह: (षष्ठी तत्पुरुष:)।

शंखध्वनि: – शंखस्य ध्वनि: (षष्ठी तत्पुरुष:)।

समारोहारम्भे – समारोहस्य आरम्भे (षष्ठी तत्पुरुष:)।

चत्वारि युगानि – चतुर्युगानि (कर्मधारय:)।

प्रश्ना: (Questions)

(I) एकपदेन उत्तरत–

(i) युगानि कति सन्ति? (ii) क: सङ्कल्पवाचनम् करोति?

(II) पूर्णवाक्येन उत्तरत–

(i) कदा अभिनन्दनसमारोह: आयोज्यते? (ii) कल्प: क: भवति?

(III) भाषिककार्यम्–

(i) 'वर्षस्य' अर्थे अत्र किं पदं प्रयुक्तम्?

(क) संवत्सरस्य (ख) मासस्य (ग) दिनस्य (घ) पक्षस्य

(ii) ब्रह्मण: आयु: कति वर्षाणि?

(क) सहस्रम् (ख) लक्षम् (ग) शतम् (घ) नियुतम्

(iii) आयु: इति पदं कस्मिन् लिङ्गे अस्ति?

(क) पुल्लिङ्गे (ख) स्त्रीलिङ्गे (ग) नपुंसकलिङ्गे (घ) कस्मिन्नपिन

(iv) कलियुगं कं शतकं प्रविशति?

(क) पञ्च पञ्चाशत्तमम् (ख) एकपञ्चाशत्तमम् (ग) त्रिपञ्चाशत्तमम् (घ) द्विपञ्चाशत्तमम्

उत्तराणि– (I) (i) चत्वारि (ii) विद्वान्।

(II) (i) युगादि पर्वणि नूतनसंवत्सरस्य अभिनन्दनसमारोह: आयोज्यते। (ii) ब्रह्मण: एकं दिनं एव एक: कल्प: मन्यते।

(III) (i) (क) संवत्सरस्य (ii) (ग) शतम् (iii) (ग) नपुंसकलिङ्गे (iv) (घ) द्विपञ्चाशत्तमम्।

प्रश्ननिर्माणम्– (i) ब्रह्मण: आयु: **शतं** वर्षाणि। (ii) **शंखध्वनि:** श्रूयते।

(iii) कश्चन विद्वान् **संकल्प वाचनं** करोति। (iv) एक: कल्प: एव **ब्रह्मण:** एकं दिनं मन्यते।

उत्तराणि– (i) कति? (iv) का? (ii) किम्? (iv) कस्य?

'विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य ब्रह्मण: द्वितीयपरार्धे श्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे प्रथमचरणे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे आर्यावर्तैकदेशे यमुनातीरे दिल्लीमण्डले 'नन्दन' नाम संवत्सरे, सूर्योत्तरायणे, वसन्तर्तौ चैत्रमासे, शुक्लपक्षे, प्रतिपदायाम् तिथौ गुरुवासरे उत्तराभाद्रपदनक्षत्रे, शुक्लयोगे किंस्तुघ्नकरणे..................नामाहम् मङ्गलकार्यं करिष्ये।'
अये! कथम् इमम् सङ्कल्पं श्रुत्वा विस्मिता: यूयम्? अयं तु वर्तमानकालदेशपरिचायक:। प्राचीनतमा हि एषा गणना। अपि ज्ञायते मदीयाया: अस्या: गणनाया: आधार:?

हिंदी अनुवाद (Hindi Translation)

"विष्णु की आज्ञा से प्रवर्तमान ब्रह्म के दूसरे परार्ध में, श्वेतवाराह कल्प में, वैवस्वत मन्वतर में अट्ठाईसवें कलियुग में, प्रथम चरण में, जम्बूद्वीप में भारतवर्ष में भरत खण्ड में आर्यावर्त नामक एक खण्ड में यमुना के किनारे दिल्ली मण्डल में, नन्दन नामक संवत्सर में सूर्य के उत्तरायण में, वसन्त ऋतु में चैत्रमास में, शुक्लपक्ष में, प्रथमा तिथि में बृहस्पतिवार को उत्तराभाद्रपद नामक नक्षत्र में शुक्लयोग में, विघ्ननाशार्थ..................नाम वाला मैं मंगल कार्य करूँगा।"
अरे, इस संकल्प को सुनकर तुम सब आश्चर्यचकित कैसे हो गए? यह वर्तमान समय और देश का परिचय देने वाला है। यह गिनती अत्यन्त पुरानी है। क्या तुम सब मेरी इस काल गणना के आधार को जानते हो? .

शब्दार्था: (Word-meanings Sanskrit to Sanskrit, Hindi and English)

विस्मित:–चकिता:, आश्चर्य में पड़े हुए (Surprised)। **मदीयाया:**–मम, मेरी (Mine)। **गणनाया:**–कलनस्य, गणना का (Of counting)।

सन्धि-विच्छेद: (Disjoin Sandhi)

विष्णोराज्ञया – विष्णो: + आज्ञया (विसर्ग सन्धि:)।
सङ्कल्पम् – सम् + कल्पम् (परसवर्ण सन्धि:)।
वसन्तर्तौ – वसन्त + ऋतौ (गुण सन्धि:)।
सूर्योत्तरायणे – सूर्य + उत्तर (गुण) + अयने (दीर्घ सन्धि:)।
नामाहम् – नाम + अहम् (दीर्घ सन्धि:)।

समासा: (Compounds)

द्वितीयपरार्धे – द्वितीये परार्धे (कर्मधारय:)।
मङ्गलकार्यम् – मङ्गलम् कार्यम् (कर्मधारय:)।
यमुनातीरे – यमुनाया: तीरे (षष्ठी तत्पुरुष:)।
वर्तमानदेशकालपरिचायका: – वर्तमान देशस्य कालस्य च परिचायका: (षष्ठी तत्पुरुष:)।

प्रत्यया: (Suffixes)

प्रवर्तमानस्य – प्र + वृत् + शानच्। प्राचीनतमा – प्राचीनतम + टाप्। विस्मिता: – वि + स्मि + क्त।

प्रश्ना: (Questions)

(I) एकपदेन उत्तरत–

(i) 'सङ्कल्प:' कस्य परिचायक:? (ii) एषा गणना कीदृशी वर्तते?

(II) पूर्णवाक्येन उत्तरत–

(i) तिथि: का अस्ति? (ii) अत्र क: प्रश्न: वर्तते?

(III) भाषिककार्यम्–

(i) 'करिष्ये' इति क्रियाया: कर्तृपद किम्?
(क) त्वम् (ख) युवाम् (ग) अहम् (घ) आवाम्
(ii) 'अयम् तु वर्तमान कालदेशपरिचायक:' इत्यस्मिन् वाक्ये 'अयम्' पदस्य प्रयोग: कस्मै अभवत्?
(क) कालाय (ख) वचनाय (ग) वाक्याय (घ) सङ्कल्पाय
(iii) 'विस्मता:' इति पदे क: प्रत्यय:?
(क) क्त (ख) क्ता: (ग) क्तवतु (घ) क्त्वा
(iv) 'प्राचीनतमा' इति कस्य पदस्य विशेषणम्?
(क) सृष्टि: पदस्य (ख) गणना पदस्य (ग) युगम् पदस्य (घ) उत्पत्ति: पदस्य

उत्तराणि– (I) (i) वर्तमानकालदेशयो: (ii) प्राचीनतमा।
(II) (i) तिथि: प्रतिपदा अस्ति। (ii) 'अपि जायते मदीयाया: अस्या: गणनाया: आधार:' इति अत्र प्रश्न: वर्तते।
(III) (i) (ग) अहम् (ii) (घ) सङ्कल्पाय (iii) (क) क्त (iv) (ख) 'गणना' पदस्य।

प्रश्ननिर्माणम्– (i) **प्राचीनतमा** हि एषा गणना। (ii) **अयं** तु वर्तमान-कालदेशपरिचायक:।
(iii) यमुना नदी **दिल्लीमण्डले** वर्तते। (iv) अधुना अहं **मङ्गलकार्यं** करिष्ये।

उत्तराणि–(i) कीदृशी (ii) क: (iii) कुत्र (iv) किम्।

www.dreamtopper.in

(4)

मम कलनस्य तु आधारः सूर्य एव। सूर्यस्य द्वे गती उत्तरायणम् दक्षिणायनञ्च। प्रयेकम् अयनस्य अवधिः षण्मासाः। भारतीयमासानां नामानि नक्षत्रनामभिः सम्बद्धानि। पूर्णिमायां यत् नक्षत्रं भवति तेनैव नाम्ना तस्य मासस्य नाम भवति। यथा चैत्रे मासे पूर्णिमा चित्रानक्षत्रयुता भवति, अतः तस्य मासस्य नाम 'चैत्रः' भवति।

हिंदी अनुवाद (Hindi Translation)

मेरी गिनती का आधार तो सूर्य ही है। सूर्य की दो गतियाँ होती हैं–उत्तरायण और दक्षिणायन। प्रत्येक अयन की समय-सीमा छः मास होती है। भारतीय महीनों के नाम नक्षत्र के नामों से जुड़े हैं। पूर्णिमा में जो नक्षत्र होता है उसी के नाम से ही उस मास का नाम होता है। जिस प्रकार चैत्रमास में पूर्णिमा चित्रा नक्षत्र से युक्त होती है, इसलिए उस मास का नाम चैत्र मास होता है।

शब्दार्थाः (Word-meanings Sanskrit to Sanskrit, Hindi and English)

कलनस्य–गणनायाः, गणना का (Of counting)। **अवधिः**–समयः, समय (Duration)। **नक्षत्रम्**–तारकम्, नक्षत्र (Star)।

सन्धि-विच्छेदः (Disjoin Sandhi)

दक्षिणायनञ्च – दक्षिण + अयनम् (दीर्घ सन्धिः) + च (परसवर्ण सन्धिः)।

उत्तरायणम् – उत्तर + अयनम् (दीर्घ सन्धिः)। षण्मासाः – षट् + मासाः (व्यंजन सन्धिः)।
प्रत्येकम् – प्रति + एकम् (यण् सन्धिः)। तेनैव – तेन + एव (वृद्धि सन्धिः)।

समासाः (Compounds)

प्रत्येकम् – एकम् एकम् इति (अव्ययीभावः)। नक्षत्रनामभिः – नक्षत्रणाम् नामभिः (षष्ठी तत्पुरुषः)।
चित्रनक्षत्रयुता – चित्रानक्षत्रेण युता (तृतीया तत्पुरुषः)।

प्रत्ययाः (Suffixes)

सम्बद्धानि – सम् + बध् + क्त। युता – युत + टाप्।

प्रश्नाः (Questions)

(I) एकपदेन उत्तरत–

(*i*) सूर्यस्य कति गती? (*ii*) अयनस्य अवधिः कति मासाः वर्तते?

(II) पूर्णवाक्येन उत्तरत–

मासस्य नाम कथम् भवति?

(III) भाषिककार्यम्–

(*i*) 'समयः' इत्यर्थे अत्र किं पदं प्रयुक्तम्?
(क) कालः (ख) अवधिः (ग) कलनम् (घ) यापनम्

(*ii*) 'चैत्रमासे' इति अनयोः पदयोः विशेष्यपदं किम्?
(क) चैत्रः (ख) चैत्रे (ग) मासः (घ) मासे

(*iii*) 'गती' इति पदम् कस्मिन् वचने अस्ति?
(क) द्विवचने (ख) एकवचने (ग) बहुवचने (घ) कस्मिन्नपिन

(*iv*) 'उत्तरायणम्' इति पदस्य विलोमपदं लिखत।
(क) दक्षिणायनम् (ख) अयनम् (ग) दक्षिणम् (घ) दक्षिणायने

उत्तराणि– (I) (*i*) द्वे (*ii*) षण्मासाः।
(II) पूर्णिमायां यत् नक्षत्रं भवति तेनैव नाम्ना तस्य मासस्य नाम भवति।
(III) (*i*) (ख) अवधिः (*ii*) (घ) मासे (*iii*) (क) द्विवचने (*iv*) (क) दक्षिणायनम्।

प्रश्ननिर्माणम्– (*i*) सूर्यः एव **मम** कलनस्य आधारः अस्ति। (*ii*) भारतीयमासानां नामानि **नक्षत्रनामभिः** सम्बद्धानि।
(*iii*) सूर्यस्य **द्वे** गती भवतः। (*iv*) प्रत्येकम् अयनस्य **अवधिः** षण्मासाः अस्ति।

उत्तराणि–(*i*) कस्य (*ii*) कैः (*iii*) कति (*iv*) का

(5)

संवत्सरस्य तु विषये इदमुच्यते–

षण्णाभेर्द्वादशाक्षस्य चतुर्विंशतिपर्वणः।
यस्त्रिषष्टिशतारस्य वेदार्थं स परः कविः॥1॥

षड्ऋतव एव मे नाभयः। द्वादशमासा एव अक्षत्वेन गण्यन्ते। चतुर्विंशतिः पक्षा एव पर्वाणि। षष्ट्युत्तर त्रिशतानि दिनानि एव अराणि।

परमहम् अखण्डः शाश्वतः विभुः च। नूतनसंवत्सरोत्सवदिवसे इदानीम् इयमेव मे शुभाशंसा–

सर्वस्तरतु दुर्गाणि, सर्वो भद्राणि पश्यतु।
सर्वः कामानवाप्नोतु, सर्वः सर्वत्र नन्दतु॥2॥

हिंदी अनुवाद (Hindi Translation)

संवत्सर के विषय में तो यह कहा गया है–जो व्यक्ति छः नाभियों, बारह धुरियों, चौबीस पर्वों, तीन सौ साठ अरों के अर्थ को जानता है, वही महान् विद्वान् है।

www.dreamtopper.in

छः ऋतुएँ ही मेरी छः नाभियाँ हैं। बारह महीने ही बारह अक्षों के रूप में गिने जाते हैं। चौबीस पक्ष ही चौबीस पर्व हैं। तीन सौ साठ दिन ही तीन सौ साठ अरे हैं परन्तु मैं तो अखण्ड, शाश्वत् और सर्वव्यापक हूँ। नववर्ष के उत्सव पर आपके लिए मेरी यही शुभकामना है।
सभी कठिनाइयों को पार करें। सभी का कल्याण हो (सभी अच्छी बातें देखें)। सबकी सारी इच्छाएँ पूर्ण हों। सभी सब जगह प्रसन्न रहें।

अन्वयः (Prose-order)

षण्णाभेर्द्वादशाक्षस्य चतुर्विंशतिपर्वणः।
यस्त्रिषष्टिशतारस्य वेदार्थं स परः कविः॥1॥

1. यः षट् नाभेः (*i*) ………………… चतुर्विंशतिः-पर्वणः (*ii*) ………………… शत-अरस्य (*iii*) ………………… वेद सः परः (*iv*) ………………… वर्तते।

मञ्जूषा– त्रिषष्टि, कविः, द्वादशाक्षस्य, अर्थं

उत्तराणि–(*i*) द्वादशाक्षष्टस्य (*ii*) त्रिषष्टि (*iii*) अर्थं (*iv*) कविः।

सर्वस्तरतु दुर्गाणि, सर्वो भद्राणि पश्यतु।
सर्वः कामानवाप्नोतु, सर्वः सर्वत्र नन्दतु॥2॥

2. सर्वः (*i*) ………………… तरतु, सर्वः (*ii*) ………………… पश्यतु। सर्वः कामान् (*iii*) ………………… सर्वः (*iv*) ………………… नन्दतु।

मञ्जूषा– अवाप्नोतु, सर्वत्र, दुर्गाणि, भद्राणि

उत्तराणि–(*i*) दुर्गाणि (*ii*) भद्राणि (*iii*) अवाप्नोतु (*iv*) सर्वत्र।

शब्दार्थाः (Word-meanings Sanskrit to Sanskrit, Hindi and English)

शाश्वतः–सनातनः, हमेशा रहने वाला (Eternal)। **विभुः–**व्यापकः, व्यापक (Wide spread)। **शुभाशंसा–**शुभकामना, शुभकामना (Goodwishes)। **दुर्गाणि–**सङ्कटानि, कठिनाइयों को (Difficulties)।

संस्कृते भावार्थः (Summary)

षण्णाभेर्द्वादशाक्षस्य चतुर्विंशतिपर्वणः।
यस्त्रिषष्टिशतारस्य वेदार्थं स परः कविः॥1॥

अस्य भावोऽस्ति–यत् षड्ऋतवः एव कालस्य (*i*) ………………… सन्ति। द्वादशमासाः एव तस्य (*ii*) …………………कल्पन्ते। चतुर्विंशतिः पक्षाः एव पर्वाणि कथ्यन्ते। षष्ट्युत्तरत्रिशतानि (*iii*) ………………… एव अराणि सन्ति। यः एतत् सर्वं जानाति सः एव महान् (*iv*) ………………… अस्ति।

मञ्जूषा– अक्षरूपेण, विद्वान्, नाभयः, दिनानि

उत्तराणि–(*i*) नाभयः (*ii*) अक्षरूपेण (*iii*) दिनानि (*iv*) विद्वान्

सर्वस्तरतु दुर्गाणि, सर्वो भद्राणि पश्यतु।
सर्वः कामानवाप्नोतु, सर्वः सर्वत्र नन्दतु॥2॥

अर्थात्-अस्मिन् श्लोके कवेः (*i*) ………………… अस्ति यत् सर्वः (*ii*) ………………… (दुर्गाणि) तरतु। सर्वः (*iii*) ………………… पश्यतु। सर्वः (*iv*) ………………… (कामान्) प्राप्नोतु। सर्वः यत्र कुत्रापि वसेत् तत्र एव प्रसीदेत्।

मञ्जूषा– कष्टानि, मंगलानि, मंगलकामना, मनोकामनाः

उत्तराणि–(*i*) मंगलकामना (*ii*) कष्टानि (*iii*) मंगलानि (*iv*) मनोकामनाः।

सन्धि-विच्छेदः (Disjoin Sandhi)

षण्णाभेर्द्वादशाक्षस्य – षट् + नाभेः (परसवर्ण सन्धिः) + द्वादश (विसर्ग सन्धिः) + अक्षस्य (दीर्घ सन्धिः)।
वेदार्थम् – वेद + अर्थम् (दीर्घ सन्धिः)। षड्ऋतवः – षट् + ऋतवः (जश् सन्धिः)।

www.dreamtopper.in

षष्ट्युत्तर – षष्टि + उत्तर (यण् सन्धिः)। शुभाशंसा – शुभ + आशंसा (दीर्घ सन्धिः)।
यस्त्रिषष्टिशतारस्य – यः + त्रिषष्टिशत (विसर्ग सन्धिः) + अरस्य (दीर्घ सन्धिः)।
सर्वस्तरतु – सर्वः + तरतु (विसर्ग सन्धिः)।

समासाः (Compounds)

अखण्डः – न खण्डः (नञ् तत्पुरुषः)। शुभाशंसा – शुभा आशंसा (कर्मधारयः)।

प्रत्ययः (Suffix)

अक्षत्वेण – अक्ष + त्व।

प्रश्नाः (Questions)

(I) एकपदेन उत्तरत–

(*i*) अत्र 'मे' पदम् कस्मै प्रयुक्तम्? (*ii*) द्वादशमासाः केन गण्यन्ते?

(II) पूर्णवाक्येन उत्तरत–

(*i*) कालस्य का शुभाशंसा? (*ii*) अत्र कालाय कानि विशेषणानि प्रयुक्तानि?

(III) भाषिककार्यम्–

(*i*) 'अवाप्नोतु' इति पदे का मूलधातुः?
(क) अवाप् (ख) अव (ग) आप् (घ) अप्

(*ii*) 'शुभा आशंसा' इति अनयोः पदयोः विशेषणपदं किम्?
(क) शुभा (ख) शुभाः (ग) आशंसा (घ) आशंसाः

(*iii*) 'मंगलानि' इति अर्थे किं पदं प्रयुक्तम्?
(क) दुर्गाणि (ख) कामान् (ग) भद्राणि (घ) सुखानि

(*iv*) 'परमहम् अखण्डः शाश्वतः विभुः च' इत्यस्मिन् वाक्ये 'अहम्' पदम् कस्मै प्रयुक्तम्?
(क) समयाय (ख) जनाय (ग) दिनाय (घ) कालाय

(*v*) 'मे' इति पदे का विभक्तिः?
(क) तृतीया (ख) षष्ठी (ग) चतुर्थी (घ) सप्तमी

उत्तराणि– (I) (*i*) कालाय (*ii*) अक्षत्वेन।
(II) (*i*) 'सर्वः दुर्गाणि तरतु, सर्वः भद्राणि पश्यतु, सर्वः कामान् अवाप्नोतु, सर्वः सर्वत्र नन्दतु' इति कालस्य शुभाशंसा। (*ii*) अत्र कालाय अखण्डः, शाश्वतः, विभुः च त्रीणि विशेषणानि प्रयुक्तानि।
(III) (*i*) (ग) आप् (*ii*) (क) शुभा (*iii*) (ग) भद्राणि (*iv*) (घ) कालाय (*v*) (ख) षष्ठी।

प्रश्ननिर्माणम्– (*i*) **परः** कविः एव मम अर्थं वेत्ति। (*ii*) षड्ऋतवः एव **मे** नाभयः।
(*iii*) परम् **अहम्** अखण्डः, शाश्वतः विभुः च अस्मि। (*iv*) सर्वः **कामान्** अवाप्नोतु।

उत्तराणि–(*i*) कीदृशः (*ii*) कस्य (*iii*) कः (*iv*) कान्।

पाठ्यपुस्तकस्य अभ्यासः (अनुप्रयोगः)

1. एकपदेन उत्तरत (मौखिक-अभ्यासार्थम्)

(क) अस्मिन् पाठे कः वक्ता?
(ख) कालः कस्य आयुः गणयति?
(ग) कालः कथं परिवर्तते?
(घ) कस्य आयुः शतं वर्षाणि?
(ङ) कस्य अभिनन्दनसमारोहस्य वर्णनम् अत्र कृतम्?
(च) दिल्ली कस्याः नद्याः तीरे स्थिता?
(छ) कालगणनायाः आधारः कः?
(ज) सर्वः किम् तरतु?
(झ) सर्वः कुत्र नन्दतु?

उत्तराणि– (क) कालः (ख) जगतः (ग) चक्रवत् (घ) ब्रह्मणः (ङ) नूतन-संवत्सरस्य
(च) यमुनायाः (छ) सूर्यः (ज) दुर्गाणि (झ) सर्वत्र।

www.dreamtopper.in

2. अधोलिखितानां प्रश्नानाम् एकवाक्येन उत्तराणि दीयन्ताम्–

(क) कालः किं किं वीक्षते?
(ख) कालः केषां साक्षी अस्ति?
(ग) महायुगम् केषां समूहः?
(घ) कल्पः केषां समूहः?
(ङ) युगादिपर्व कदा भवति?
(च) युगादिपर्वणि किम् आयोज्यते?
(छ) सङ्कल्पे देशवाचकाः (स्थानवाचकाः) के के शब्दाः आगताः?
(ज) सूर्यस्य के गती? तयोः नाम अपि लिखत।
(झ) एकस्मिन् वर्षे कति पक्षाः?
(ञ) "परमहम् अखण्डः शाश्वतः विभुः च" इति अस्मिन् वाक्ये कालाय कानि विशेषणानि प्रयुक्तानि?

उत्तराणि– (क) कालः भूतं वर्तमानं भविष्यदपि च वीक्षते।
(ख) कालः जगतः उत्पत्तेः, विकासस्य प्रलयस्य च साक्षी अस्ति।
(ग) महायुगम् चतुर्णां युगानां समूहः।
(घ) कल्पः चतुर्दश-मन्वन्तराणां समूहः।
(ङ) युगादि पर्व नूतनसंवत्सरस्य आरम्भे भवति।
(च) युगादिपर्वणि नूतनसंवत्सरस्य अभिनन्दन समारोहः आयोज्यते।
(छ) सङ्कल्पे देशवाचकाः (स्थानवाचकाः) जम्बूद्वीपे, भारतवर्षे, भरतखण्डे, आर्यावर्तैकदेशे, यमुनातीरे, दिल्लीमण्डले इत्यादयः शब्दाः आगताः।
(ज) सूर्यस्य द्वे गती। तयोः नाम उत्तरायणं दक्षिणायनम् चास्ति।
(झ) एकस्मिन् वर्षे चतुर्विंशतिः पक्षाः भवन्ति।
(ञ) "परमहम् अखण्डः शाश्वतः विभुः च" इति अस्मिन् वाक्ये कालाय अखण्डः शाश्वतः विभुः च विशेषणानि प्रयुक्तानि।

3. उदाहरणमनुसृत्य अधोलिखितानां वाक्यानाम् प्रश्ननिर्माणं क्रियताम्–

उदाहरणम्–कृतयुगं त्रेतायुगं द्वापरयुगं कलियुगञ्चेति **चत्वारि** युगानि।

प्रश्न–कृतयुगं त्रेतायुगं द्वापरयुगं कलियुगञ्चेति **कति** युगानि?

(क) भूतं वर्तमानं भविष्यद् इति **त्रयः** कालभेदाः।
(ख) **चतुर्णां** युगानां समूह एव महायुगम्।
(ग) संवत्सरे **षड्** ऋतवः भवन्ति।
(घ) संवत्सरे **द्वादश** मासाः भवन्ति।
(ङ) **चतुर्दश** मन्वन्तराणां समूहः कल्पः।
(च) ब्रह्मणः आयुः **शतम्** वर्षाणि।

उत्तराणि–(क) कति? (ख) कति? (ग) कति? (घ) कति? (ङ) कति? (च) कति?

4. अधोलिखितानाम् कथनानाम् आशयाः विकल्परूपेण तत्समक्षमेव लिखिताः सन्ति। तेषु समुचितम् आशयं (✓) इति चिह्नं कुरुत–

उदाहरणम्–सततं चक्रवत् परिवर्तमानः
(1) कालः यदा कदा चक्रवत् भ्रमति।
(2) निरन्तरं भ्रमन् कालः चक्रम् एव।
(3) कालः चक्रम् इव निरन्तरं गतिशीलः। (✓)

(क) विश्वस्य आत्माऽहम्
(1) कालः यत्र तत्र व्याप्तः।
(2) कालः संसारस्य आत्मा।
(3) कालः विश्वस्य निर्माता।

(ख) मम कलनस्य तु आधारः सूर्य एव
(1) सूर्य एव कालगणनां करोति।
(2) सूर्यम् विना कालस्य गणना न भवति।
(3) सूर्यः अपि कालगणनायाः आधारः।

उत्तराणि–(क) कालः संसारस्य आत्मा। (✓) (ख) सूर्यम् विना कालस्य गणना न भवति। (✓)

5. अधोलिखितसंख्यावाचकपदैः रिक्तस्थानानि पूरयत–

सूर्यः..........। सूर्यस्य..........गती। जगतः..........स्थितयः सृष्टिः, विकासः प्रलयश्च। कालस्य..........युगानि। एकस्मिन् वर्षे..........नाभयः। एकस्मिन् दिवसे..........प्रहराः। संवत्सरे..........मासाः। मन्वन्तरे..........महायुगानि। कल्पे..........मन्वन्तराणि।..........वर्षाणि ब्रह्मणः आयुः।

(तिस्रः, द्वे, एकः, द्वादश, षट्, अष्ट, शतम्, चत्वारि, एकसप्ततिः, चतुर्दश)

उत्तराणि–एकः, द्वे, तिस्रः, चत्वारि, षट्, अष्ट, द्वादश, एकसप्ततिः, चतुर्दश, शतम्।

www.dreamtopper.in

6. **अधोलिखितानां शुद्धकथनानां समक्षं (✓) अशुद्धानां च समक्षं (×) इति चिह्नाङ्कनं क्रियताम्–**

यथा–मासे द्वौ पक्षौ भवतः शुक्लः कृष्णः च। (✓)

(क) चन्द्रस्य द्वे अयने भवतः। ( )

(ख) एकस्मिन् वर्षे द्वादशपक्षाः भवन्ति। ( )

(ग) नूतनः संवत्सरः चैत्रमासस्य शुक्लपक्षस्य प्रतिपदायाः प्रारम्भते। ( )

(घ) एकस्मिन् दिने अष्टप्रहराः भवन्ति। ( )

(ङ) संवत्सरे षड् ऋतवः भवन्ति। ( )

(च) प्रत्येकम् अयने अष्टमासाः भवन्ति। ( )

(छ) चैत्रमासे सूर्यः उत्तरायणः भवति। ( )

(ज) कृष्णपक्षे अमावस्या भवति। ( )

उत्तराणि–(क) × (ख) × (ग) ✓ (घ) ✓ (ङ) ✓ (च) × (छ) ✓ (ज) ✓।

7. **सङ्कल्पं पठित्वा रिक्तस्थानपूर्तिः क्रियताम्।**

यथा–इदानीम् ब्रह्मणः **द्वितीयपरार्धः** प्रचलति।

(क) इदानीम्......................कल्पः।

(ख) मन्वन्तरस्य नाम......................अस्ति।

(ग) अयम्......................कलियुगः।

(घ) संवत्सरस्य नाम......................।

(ङ) द्वीपस्य नाम......................।

(च) देशस्य नाम......................।

(छ) दिल्ली......................नद्याः तीरे वर्तते।

उत्तराणि– (क) श्वेतवाराहः (ख) वैवस्वत (ग) अष्टाविंशतितमः (घ) नन्दनः
(ङ) जम्बूः (च) आर्यावर्तः (छ) यमुनायाः।

8. **अधोलिखितानि उत्तरोत्तरक्रमेण लिखत–**

यथा–दिवसः, मासः, पक्षः, वर्षम्–दिवसः, पक्षः, मासः, वर्षम्।

1. द्वापरम्, कृतयुगम्, कलियुगम्, त्रेता।
2. मन्वतन्रम्, महायुगम्, कल्पः, ब्रह्मणः एकं दिनम्।
3. चतुर्थी, प्रतिपदा, त्रयोदशी, अष्टमी।
4. वर्षा, वसन्तः, ग्रीष्मः, हेमन्तः।
5. आषाढः, चैत्रः, ज्येष्ठः, वैशाखः।

उत्तराणि– 1. कृतयुगम्, त्रेता, द्वापरम्, कलियुगम्।
2. महायुगम्, मन्वन्तरम्, कल्पः, ब्रह्मणः एकं दिनम्।
3. प्रतिपदा, चतुर्थी, अष्टमी, त्रयोदशी।
4. वसन्तः, ग्रीष्मः, वर्षा, हेमन्तः।
5. चैत्रः, वैशाखः, ज्येष्ठः, आषाढः।

9. **अधोवत्तानि सर्वनामपदानि सन्ति। एतेभ्यः उचितं पदं चित्वा रिक्तस्थानपूर्तिः क्रियताम्–**

अहम्, इदम्, यूयम्, मम, एषा, अस्याः, सर्वः।

यथा–अहम् कलयामि जगतः आयुः प्रमाणम्।

(क) ....कलनस्य आधारः सूर्य एव।

(ख) ....शृणुत ध्यानेन।

(ग) ....जगत् पुनः पुनः जायते विलीयते च।

(घ) कीदृशी......................विचित्रा सृष्टिः।

(ङ) ....सृष्टेः विकासं प्रलयं च कालः एव जानाति।

(च) अद्य युगादिपर्वणि......................कामान् अवाप्नोतु।

उत्तराणि–(क) मम (ख) यूयम् (ग) इदम् (घ) एषा (ङ) अस्याः (च) सर्वः।

10. **अधोलिखितानि अव्ययपदानि स्थूलपदानां स्थाने एवं प्रयुज्यन्ताम् येन अर्थभेदः न स्यात्–**

भूयो भूयः, सदा, अधुना, निरन्तरम्।

(क) **सततम्** कालः चक्रवत् परिवर्तमानः अस्ति।

(ख) **इदानीम्** कलियुगस्य प्रथमः चरणः अस्ति।

(ग) **सर्वदा** शुभकार्यं सङ्कल्पेन प्रारब्धव्यम्।

(घ) **पुनः पुनः** जगत् जायते विलीयते च।

उत्तराणि– (क) **निरन्तरम्** कालः चक्रवत् परिवर्तमानः अस्ति। (ख) **अधुना** कलियुगस्य प्रथमः चरणः अस्ति।
(ग) **सदा** शुभ कार्यं सङ्कल्पेन प्रारब्धव्यम्। (घ) **भूयोभूयः** जगत् जायते विलीयते च।

www.dreamtopper.in

11. भिन्नविभक्तिकं पदम् रेखाङ्कितं कुरुत–

यथा उत्पत्तेः चतुर्णाम्, युष्माकम्, <u>ऋतवः</u> जगतः।

(क) पर्वणि, दुर्गाणि, मन्वन्तरे, वसन्ततौं।

(ख) अहम्, सङ्कल्पवाचनम्, आयुः प्रमाणम्, सङ्कल्पम्।

(ग) दक्षिणायने, दिवसे, ध्यानेन, चरणे।

उत्तराणि– (क) दुर्गाणि (ख) अहम् (ग) ध्यानेन।

12. अधः केषाञ्चित् समस्तपदानां विग्रहाः समासनामानि च निर्दिष्टानि। पाठात् चित्वा प्रत्येकं विग्रहस्य समक्षं समस्तपदम् लिखत–

	विग्रहः	**समस्तपदम्**	**समासनाम**
यथा	एकम् एकम् प्रति	प्रत्येकम्	अव्ययीभावः
(क)	शंखस्य ध्वनिः	....	षष्ठी तत्पुरुषः
(ख)	अभिनन्दनस्य समारोहः	....	षष्ठी तत्पुरुषः
(ग)	यमुनायाः तीरे	....	षष्ठी तत्पुरुषः
(घ)	महत् च तत् युगम्	....	कर्मधारयः
(ङ)	मङ्गलं च तत् कार्यम्	....	कर्मधारयः
(च)	चित्रानक्षत्रेण युता	....	तृतीया तत्पुरुषः
(घ)	सङ्कल्पस्य वाचनम्	....	षष्ठी तत्पुरुषः

उत्तराणि– (क) शंखध्वनिः (ख) अभिनन्दन समारोहः (ग) यमुनातीरे (घ) महायुगम्
(ङ) मङ्गलकार्यम् (च) चित्रानक्षत्रयुता (छ) सङ्कल्पवाचनम्।

13. अधः शानच् प्रत्ययान्तपदानि सन्ति। तेषाम् प्रकृतिः निर्देशनीया।

	पदम्	**प्रकृतिः**
यथा	परिवर्तमानः	परि + वृत्
	विद्यमानः	....
	वीक्षमाणः	....
	वर्तमानः	....

उत्तराणि– (*i*) विद् (*ii*) वि + ईक्ष् (*iii*) वृत्।

14. अधोलिखितपदेषु यद् उत्तरपदम् अस्ति तत् लिखत–

यथा	दक्षिणायनम्	=	अयन
	द्वादशाक्षस्य	=	अक्ष
	सूर्योत्तरायणे	=	....
	वसन्ततौं	=	....
	प्रत्येकम्	=	....

उत्तराणि– अयन, ऋतु, एक।

15. अधोलिखितपदानां विपरीतार्थकपदानि पाठात् एव चित्वा लिखत–

यथा–	भूतम्	**वर्तमानम्**
(क)	उत्पत्तेः	....
(ख)	जायते	....
(ग)	प्राचीनः	....
(घ)	कलियुगम्	....
(ङ)	उत्तरायणम्	....
(च)	इदानीम्	....

उत्तराणि– (क) प्रलयस्य (ख) विलीयते (ग) नूतनः (घ) कृतयुगम् (ङ) दक्षिणायनम् (च) तदा।

www.dreamtopper.in

गतिविधयः

1. 'युगादिपर्व चैत्रमासे शुक्लपक्षे प्रतिपदायाम् तिथौ भवति' इति भवन्तः पठितवन्त एव। अधोलिखितानि पर्वाणि कस्मिन् मासे कस्मिन् पक्षे कस्यां तिथौ च भवन्ति इति लिख्यताम्।

पर्वनाम	मासः	पक्षः	तिथिः
1. विजयदशमी	....	....	....
2. जन्माष्टमी	....	....	....
3. वाल्मीकिजयन्ती	....	....	....
4. दीपावलिः	....	....	....
5. रक्षाबन्धनम्	....	....	....
6. रविदासजयन्ती	....	....	....
7. बुद्धपूर्णिमा	....	....	....
8. क्रिसमस्-दिवसः	....	....	....
9. होलिकोत्सवः	....	....	....
10. रामनवमी	....	....	....
11. गुरुनानकजयन्ती (गुरुपर्व)	....	....	....

उत्तराणि–

पर्वनाम	मासः	पक्षः	तिथिः
1. विजयदशमी	आश्विनमासे	शुक्लपक्षे	दशम्याम्
2. जन्माष्टमी	भाद्रपदमासे	कृष्णपक्षे	अष्टम्याम्
3. वाल्मीकिजयन्ती	आश्विनमासे	कृष्णपक्षे	एकादश्याम्
4. दीपावलिः	कार्तिकमासे	कृष्णपक्षे	अमावस्यायाम्
5. रक्षाबन्धनम्	श्रावणमासे	शुक्लपक्षे	पूर्णिमायाम्
6. रविदासजयन्ती	माघमासे	शुक्लपक्षे	पूर्णिमायाम्
7. बुद्धपूर्णिमा	वैशाखमासे	शुक्लपक्षे	पूर्णिमायाम्
8. क्रिसमस्-दिवसः	पौषमासे	कृष्णपक्षे	25 दिसम्बरे
9. होलिकोत्सवः	फाल्गुनमासे	शुक्लपक्षे	पूर्णिमायाम्
10. रामनवमी	चैत्रमासे	शुक्लपक्षे	नवम्याम्
11. गुरुनानकजयन्ती (गुरुपर्व)	कार्तिकमासे	शुक्लपक्षे	पूर्णिमायाम्

2. युगादिपर्व कदा भवति इति सङ्कल्पे ज्ञातमेव। दिल्लीनगरे 'अम्बालिका' नाम्न्याः बालिकायाः जन्मदिवसः 'रामवनमी' इति दिवसे आयोज्यते। अधोलिखितेषु देशकालवाचकेषु शब्देषु परिवर्तनम् भविष्यति न वा इति लिखत–

यथा ब्रह्मणः द्वितीये परार्धे	....	(न भविष्यति)
1. श्वेतवाराहकल्पे	....	( )
2. भारतवर्षे भरतखण्डे	....	( )
3. कलियुगे प्रथमे चरणे	....	( )
4. जम्बूद्वीपे	....	( )
5. सूर्योत्तरायणे	....	( )
6. चैत्रमासे	....	( )
7. प्रतिपदायाम् तिथौ	....	( )
8. गुरुवासरे	....	( )
9. आदित्यः नाम अहम्	....	( )

उत्तराणि– 1. न भविष्यति 2. न भविष्यति 3. न भविष्यति 4. न भविष्यति 5. न भविष्यति 6. न भविष्यति 7. भविष्यति 8. भविष्यति 9. भविष्यति।

3. नवसंवत्सरस्य आरम्भे भवान्/भवती एकम् शुभकामनापत्रं स्वमित्राय प्रेषयितुम् इच्छति। तस्मिन् कामपि शुभाशंसाम् लिखत्–

....

....

....

....

....

उत्तरम्–"नवसंवत्सरस्य आरम्भे मित्राय शुभकामनापत्रम्"

चण्डीगढ़तः
....

प्रियमित्र!

सस्नेह नमस्ते।

अत्र कुशलम् तत्रास्तु। नवसंवत्सरः आयाति। तव कृते नवसंवत्सरः सर्वविधशुभः भवतु, तव कृते नवसंवत्सरस्य हार्दिकाः शुभकामनाः स्युः।

भवदीयः,
प्रियांशुः

www.dreamtopper.in

योग्यता-विस्तारः (न परीक्षाकृते)

पाठे दतः सङ्कल्पः गतिविधयश्च ज्ञानविस्तारार्थमेव नं तु प्रश्नपत्रे परीक्षार्थम्।

अस्माकं विज्ञानिभिः ऋषिभिः अतिप्राचीनकाले एव कालगणना आरब्धा आसीत्। एतत् तु पुराणेतिहासादीनां वेदानां च परिशीलनात् स्पष्टी भवति। कालः अनादिः, अनन्तः अखण्डः च इति विचारः निर्विवादः तथापि व्यवहारार्थं कालगणना आवश्यकी। अतएव व्यवहारे कालभेदः दृश्यते अनुभूयते वा। एवं हि कल्पः युगम् संवत्सरः अयनम्, मासः, पक्षः, तिथिः, घण्टा, निमेषः इति स्थूलविभागाः कालस्य। प्रतिपल-त्रुट्यादयः इतोऽपि सूक्ष्मभेदाः सन्ति।

हिंदी अनुवाद (Hindi Translation)–पाठ में दिया गया संकल्प और गतिविधियाँ ज्ञान विस्तार के लिए ही हैं, परीक्षा में प्रश्नपत्र में देने के लिए नहीं।

हमारे विज्ञानवेत्ता ऋषियों के द्वारा अत्यन्त प्राचीन काल में ही कालगणना प्रारम्भ कर दी गयी थी। यह प्राचीन इतिहास ग्रन्थों, वेदों आदि के परिशीलन से स्पष्ट होता है। काल अनादि, अनन्त और अखण्ड है, यह विचार निर्विवाद है। फिर भी व्यवहार के लिए काल की गणना आवश्यक है। इसी कारण व्यवहार में काल भेद दिखाई देता है अथवा अनुभव किया जाता है। इसी प्रकार कल्प, युग, संवत्सर, अयन, मास, पक्ष, तिथि, घंटा, सेकेण्ड आदि समय के स्थूल विभाग हैं। प्रतिपल, त्रुट्या आदि इससे भी सूक्ष्म भेद हैं।

भावविस्तारः

युगादिः ब्रह्मा चैत्रशुक्लप्रतिपदि एव सृष्टिम् आरब्धवान् इति मन्यते। ततः एव कालगणना प्रारब्धा। कालः अनादिः अखण्डश्च किन्तु अस्माकं व्यवहाराय एव कालभेदः प्रवर्तते। एवं हि कल्प-युग-संवत्सर-अयन-मास-पक्ष-तिथि-नक्षत्र-घण्टा-निमेषरूपाः कालविभागाः प्रसिद्धाः।

द्वितीये परार्धे अपरस्मिन् अर्धभागे। सम्प्रति सृष्टिकर्तुः ब्रह्मणः आयुः एकपञ्चाशत्तमवर्षस्य प्रथमः दिवसः अस्ति।

कल्पः ब्रह्मणः एकं दिनम्। चतुर्युग सहस्राणि ब्रह्मणो दिनमुच्यते। सृष्टेः अवधिः। 432000000 मानववर्षाणि। सम्प्रति श्वेतवाराहकल्पः।

कलियुगम् 432000 वर्षाणि।

द्वापरम् कलियुगस्य द्विगुणम् 864000 वर्षाणि।

त्रेता कलियुगस्य त्रिगुणम् 1296000 वर्षाणि।

कृतयुगम् कलियुगस्य चतुर्गुणम् 1728000 वर्षाणि।

मन्वन्तरम् मनोः कालः मन्वन्तरम्। ब्रह्मणः एकस्मिन् दिने चतुर्दश मनुवः भवन्ति। एकमनोः कालः 4320000 वर्षाणि (मनुः 1/79)। एकस्मिन् मनुकाले 71 महायुगानि भवन्ति। सम्प्रति वैवस्वतमन्वन्तरः प्रचलति।

युगादिपर्व चैत्रमासस्य शुक्लपक्षस्य प्रतिपदा सृष्टेः आदितिथिः। अतएव सा नूतनसंवत्सरस्य प्रथमः दिवसः मन्यते। दक्षिणे भारते गुडीपरेवा इत्यपि कथ्यते।

द्विपञ्चाशत्तमं कलियुगस्य 5100 वर्षाणि गतानि। सम्प्रति कलियुगं 5101 वर्षं प्रविशति।

जम्बूद्वीपः मेरुं परितः स्थितेषु सप्तद्वीपेषु एकः।

भरतखण्डम् भारतस्य एकस्य भागस्य नामान्तरम्।

आर्यावर्तः आसमुद्रात्तु वै पूर्वादासमुद्राच्च पश्चिमात्।
तयोरेवान्तरं गिर्योः (हिमविन्ध्ययोः) आर्यावर्तं विदुर्बुधाः।। (मनु० 2/22)

संवत्सरः वर्षः। षष्टिः संवत्सराः भवन्ति। क्रमेण आवर्तन्ते।

तिथिः प्रतिपक्षे पञ्चदशातिथयः भवन्ति। कृष्णपक्षे पञ्चदशी तिथिः अमावस्या शुक्लपक्षे च पञ्चदशी तिथिः पूर्णमासी कथ्यते।

नक्षत्रम् ज्योतिर्विदैः ज्ञातं यद् आकाशमण्डलं सप्तविंशतिभागेषु विभक्तमिव दृश्यते। नभसि द्युतिमानानि नक्षत्राणि सप्तविंशति सन्ति। तेषाम् यथा आकृतिः तथैव तेषां नामानि जातानि। यथा अश्विनी भरणी.............. कृतिका .... रोहिणी............ मृगशिरादीनि।

शुभाशंसा यथा पाठस्यान्ते दत्ता शुभाशंसा विक्रमोर्वशीयम् नाम नाटकात् उद्धृता। अन्याः शुभाशंसाः–

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग! भवेत्।।
कल्याणमस्तु सर्वेषां, विलसन्तु समृद्धयः।
सुखाः समीरणा वान्तु, भान्तु सर्वा दिशः शुभाः।।

www.dreamtopper.in

हिंदी अनुवाद (Hindi Translation)–

युगादि	ब्रह्मा ने चैत्रमास के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा को ही सृष्टि प्रारम्भ की, ऐसा माना जाता है। तब से ही कालगणना प्रारम्भ हुई। काल अनादि और अखण्ड है परन्तु हमारे व्यवहार के लिए ही कालभेद किया गया है। यही कल्प, युग, संवत्सर-अयन-मास-पक्ष-तिथि-नक्षत्र-घण्टा निमेष रूप में प्रसिद्ध काल विभाग हैं।
द्वितीये परार्धे	बाद वाले आधे भाग में। आजकल ब्रह्मा की आयु इक्यानवें वर्ष का प्रथम दिन है।
कल्प	ब्रह्मा का एक दिन। सृष्टि की अवधि 432000000 मानव वर्ष है। अब श्वेतवाराहकल्प है।
कलियुग	432000 वर्ष।
द्वापर	कलियुग के दुगुने 864000 वर्ष।
त्रेता	कलियुग के तिगुने 1296000 वर्ष।
कृतयुग	कलियुग के चौगुने 1728000 वर्ष।
मन्वन्तर	मनु का काल मन्वन्तर कहलाता है। ब्रह्मा के एक दिन में चौदह मनु होते हैं, एक मनु का काल 4320000 वर्ष होता है। एक मनुकाल में 71 महायुग होते हैं। अब वैवस्वत मन्वन्तर चल रहा है।
युगादिपर्व	चैत्रमास के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा सृष्टि की आदि तिथि है। अतः वही नए संवत्सर का प्रथम दिन माना जाता है। इसे दक्षिण भारत में गुडीपरेवा भी कही जाती है।
5200वीं शतीं	कलियुग में 5100 वर्ष बीत गए हैं। अब कलियुग 5101 वें वर्ष में प्रवेश कर रहा है।
जम्बूद्वीप	मेरु पर्वत के चारों तरफ स्थित सातों द्वीपों में से एक।
भरतखण्ड	भारत के एक भाग का दूसरा नाम।
आर्यावर्त	पूर्व दिशा में समुद्र तक तथा पश्चिम दिशा में समुद्र तक, इसी प्रकार हिमगिरि से विन्ध्याचल पर्वत के मध्य स्थित देश आर्यावर्त है।
संवत्सर	वर्ष। 60 संवत्सर होते हैं जो क्रमशः आते हैं।
तिथि	प्रत्येक पक्ष में पन्द्रह तिथियाँ
नक्षत्र	ज्योतिर्विदों के अनुसार आकाशमण्डल 27 भागों में विभक्त है। आकाश में चमकने वाले नक्षत्र 27 हैं। उनकी जैसी आकृति है, वैसे ही उनके नाम हैं। जैसे–अश्विनी, भरणी.............. कृतिका.............. रोहिणी .... मृगशिरा आदि।

शुभकामनावचन पाठ के अन्त में दिए गए शुभकामनावचन विक्रमोर्वशीयम् नामक नाटक से लिए गए हैं। कुछ अन्य शुभकामना वचन हैं–

(*i*) सभी सुखी रहें, सभी निरोग रहें, सबका कल्याण हो, कोई दुःखी न हो।

(*ii*) सबका कल्याण हो, सबकी धनसम्पत्ति बढ़े, सुखदायी वायु बहे, सभी दिशाएँ कल्याणकारी होकर सुशोभित हों।

परीक्षोपयोगी अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तराणि

1. अधोलिखितं गद्यांशं पठित्वा प्रश्नान् उत्तरत– **5**

(अ) कालोऽहम्। अहं खलु कालः। विश्वस्य आत्माऽहम्। कलयामि गणयामि जगतः आयुः प्रमाणम्। सततं चक्रवत् परिवर्तमानः भूतं वर्तमानं भविष्यदपि च वीक्षमाणः अहमेव साक्षी जगतः उत्पत्तेः विकासस्य प्रलयस्य च। इदम् जगत् तु पुनः पुनः जायते विलीयते च परमहं सर्वदा विद्यमानोऽस्य सर्व क्रियाकलापं पश्यामि। अहो! किं जानीथ यूयम्, 'कियती प्राचीना इयम् सृष्टिः!' नैव! तर्हि शृणुत ध्यानेन। 'कृतयुगं त्रेतायुगं द्वापरयुगं कलियुगञ्चेति चत्वारि युगानि। चतुर्णां युगानां समूहः एव महायुगम्। एक सप्ततिमहायुगानाम् एकम् भन्वन्तरम्। चतुर्दशमन्वन्तराणां समूहः कल्पः। एकः कल्प एव ब्रह्मणः एकं दिनं मन्यते। ब्रह्मणः आयुः शतं वर्षाणि।'

I. एकपदेन उत्तरत– **½ × 4 = 2**

(*i*) चक्रवत् कः परिवर्तते?

(*ii*) ब्रह्मणः आयुः कति वर्षाणि?

(*iii*) कल्पः केषाम् समूहः?

(*iv*) कालः कस्य आयुः गणयति?

II. पूर्णवाक्येन उत्तरत– **1 × 1 = 1**

कालः केषां साक्षी अस्ति?

www.dreamtopper.in

III. निर्देशानुसारम् कुरुत– ½ × 4 = 2

(*i*) 'विश्वस्य आत्माऽहम्' अत्र 'अहम्' सर्वनामपदं कस्मै प्रयुक्तम?

(क) समयाय (ख) जगते

(ग) संसाराय (घ) कालाय

(*ii*) 'परमहं सर्वदा विद्यमान:' अत्र 'अहम्' इति सर्वनामपदस्य विशेषणपदं चित्वा लिखत।

(क) परम् (ख) सर्वदा

(ग) विद्यमान: (घ) विद्यमाना

(*iii*) 'नूतना' इति अस्य किं विपरीतार्थकं पदम् अत्र प्रयुक्तम्?

(क) प्राचीना (ख) अर्वाचीना

(ग) नवीना (घ) पुरातना

(*iv*) 'भूयोभूय:' अस्मिन् अर्थे किम् अव्ययपदम् अत्र प्रयुक्तम्?

(क) सर्वथा (ख) निरन्तरम्

(ग) पुन: पुन: (घ) तर्हि

उत्तराणि– (I) (*i*) काल: (*ii*) शतम् (*iii*) चतुर्दशमन्वन्तराणाम् (*iv*) जगत:

(II) काल: जगत: उत्पत्ते: विकासस्य प्रलयस्य च साक्षी अस्ति।

(III) (*i*) (घ) कालाय (*ii*) (ग) विद्यमान: (*iii*) (क) प्राचीना (*iv*) (ग) पुन: पुन:।

(आ) मम कलनस्य तु आधार: सूर्य एव। सूर्यस्य द्वे गती उत्तरायणम् दक्षिणायनञ्च। प्रत्येकम् अयनस्य अवधि: षण्मासा:। भारतीयमासानां नामानि नक्षत्रनामभि: सम्बद्धानि। पूर्णिमायां यत् नक्षत्रं भवति तेनैव नाम्ना तस्य मासस्य नाम भवति। यथा चैत्रे मासे पूर्णिमा चित्रानक्षत्रयुता भवति अत: तस्य मासस्य नाम 'चैत्र:' भवति। संवत्सरस्य तु विषये इदमुच्यते–

षण्णाभेर्द्वादशाक्षस्य चतुर्विंशतिपर्वण:।
यस्त्रिषष्टिशतारस्य वेदार्थं स पर: कवि:।।

I. एकपदेन उत्तरत– ½ × 2 = 1

(*i*) कस्य द्वे गती स्त:?

(*ii*) कस्मिन् मासे पूर्णिमा चित्रानक्षत्रयुता भवति?

II. पूर्णवाक्येन उत्तरत– 1 × 2 = 2

(*i*) भारतीयमासानां नामानि कै: सम्बद्धानि सन्ति?

(*ii*) कालचक्रस्य कति अराणि सन्ति?

III. निर्देशानुसारम् उत्तरत– 1 × 2 = 2

(*i*) 'वर्षम्' इत्यर्थे अत्र क: शब्द: प्रयुक्त:?

(क) मास: (ख) संवत्सर:

(ग) समय: (घ) पक्ष:

(*ii*) 'पूर्णिमा' इत्यस्य किं विशेषणम् अत्र प्रयुक्तम्?

(क) चित्रा (ख) नक्षत्रेण

(ग) युता (घ) चित्रानक्षत्रयुता

उत्तराणि– (I) (*i*) सूर्यस्य (*ii*) चैत्रे।

(II) (*i*) भारतीयमासानां नामानि नक्षत्रनामभि: सम्बद्धानि सन्ति। (*ii*) षष्ट्युत्तरत्रिशतानि दिनानि एव कालचक्रस्य अराणि सन्ति।

(III) (*i*) (ख) संवत्सर: (*ii*) (घ) चित्रानक्षत्रयुता।

2. प्रदत्ते भावार्थे मञ्जूषाया: सहायतया रिक्तस्थानपूर्ति: क्रियताम्– 1 × 4 = 4

सर्वस्तरतु दुर्गाणि, सर्वो भद्राणि पश्यतु।
सर्व: कामानवाप्नोतु, सर्व: सर्वत्र नन्दतु।।

भावार्थ:–अस्मिन् श्लोके कवे: मंगलकामना अस्ति यत् सर्व: (*i*) .... तरतु। सर्व: भद्राणि (*ii*) ....। सर्व: कामान् (*iii*) ....। सर्व: यत्र कुत्र अपि (*iv*) .... तत्र एव प्रसीदतु।

मञ्जूषा– | पश्यतु, गच्छतु, अवाप्नोतु, दुर्गाणि |

उत्तराणि–(*i*) दुर्गाणि (*ii*) पश्यतु (*iii*) अवाप्नोतु (*iv*) गच्छतु।

3. अधोलिखितकथनेषु रेखाङ्कितानि पदानि आधृत्य उदाहरणानुसारं प्रश्ननिर्माणं कुरुत– 1 × 6 = 6

(*i*) <u>ब्रह्मण:</u> आयु: शतं वर्षाणि।

(*ii*) अहम् एव साक्षी <u>जगत:</u> उत्पत्ते:।

(*iii*) संवत्सरे <u>द्वादश</u> मासा: भवन्ति।

(*iv*) चैत्रमासे <u>सूर्य:</u> उत्तरायण: भवति।

(*v*) संवत्सरे <u>षड्</u> ऋतव: भवन्ति।

(*vi*) एकस्मिन् वर्षे <u>चतुर्विंशति:</u> पक्षा:।

उत्तराणि–(*i*) कस्य? (*ii*) कस्य? (*iii*) कति? (*iv*) क:? (*v*) कति? (*vi*) कति?

4. अधोलिखितासु पङ्क्तिषु रेखाङ्कित पदानां प्रसङ्गानुसारं शुद्धम् अर्थं चित्वा लिखत– 1 × 3 = 3

(*i*) अहम् अखण्ड: <u>शाश्वत:</u> विभु:।

(क) शशकवत् (ख) श्व: भविष्यति

(ग) नित्य: (घ) सदैव

(*ii*) मम <u>कलनस्य</u> आधार: सूर्य एव।

(क) गतदिनस्य (ख) कल्पनाया:

(ग) गणनाया: (घ) कालस्य

www.dreamtopper.in

(*iii*) नूतनसंवत्सर-उत्सवदिवसे इदानीम् इयमेव मे शुभांशसा:।

(क) वर्षम् (ख) मास:

(ग) पक्ष: (घ) दिनम्

उत्तराणि– (*i*) (ग) नित्य: (*ii*) (ग) गणनाया: (*iii*) (क) वर्षम्।

5. अधोलिखितपंक्तिषु स्थूलाक्षरपदानाम् प्रसानुसारम् शुद्धम् अर्थम् चिनुत– **1 × 1 = 1**

सर्वस्तरतु दुर्गाणि, सर्वो भद्राणि पश्यतु।
सर्व: कामानवाप्नोतु, सर्व: सर्वत्र नन्दतु॥

मञ्जूषा

(*i*) चलं चित्तं चलं वित्तं चले जीवितयौवने।
(*ii*) सन्तोष एव पुरुषस्य परं निधानम्।
(*iii*) शिक्ष्यते सहपाठिभि:।
(*iv*) पद्मपत्रस्थितम् वारि धत्ते मुक्ताफलश्रियम्।
(*v*) गौरवं प्राप्यते दानात् न तु वित्तस्य सञ्चयात्।
(*vi*) सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुखभाग्भवेत्।

उत्तराणि–सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दु:खभाग् भवेत्।

6. निम्न पदानां समुचितै: अर्थै: सह मेलनं कुरुत– **1 × 7 = 7**

(क) शब्दा:	**(ख) अर्था:**
(1) विभु:	(क) नित्य:
(2) ब्रह्मण:	(ख) संकटानि
(3) जगत:	(ग) उत्पद्यते
(4) दुर्गाणि	(घ) संसारस्य
(5) शाश्वत:	(ङ) शुभम्
(6) मंगलम्	(च) व्यापक:
(7) जायते	(छ) ईश्वरस्य

उत्तराणि– (1) (च) व्यापक: (2) (छ) ईश्वरस्य (3) (घ) संसारस्य (4) (ख) संकटानि 5. (क) नित्य: (6) (ङ) शुभम् (7) (ग) उत्पद्यते।

मूल्यपरक प्रश्ना: (VBQs)

वाक्यानि पठित्वा वाक्याधारितान् प्रश्नाम् उत्तरत–

प्रश्ना: (*i*) 'विश्वस्य आत्माऽहम्।' इति वाक्यं क: कथयति?

(*ii*) 'अद्य कलियुगं तु द्विपञ्चाशततमं शतकं प्रविशति।' अत्र कस्य समयस्य वर्णनम् अस्ति?

(*iii*) 'प्राचीनतमा हि एषा गणना।' कस्य गणनाया: अत्र उल्लेखं भवति?

(*iv*) 'सर्व: सर्वत्र नन्दतु।' इति वाक्ये कस्य शुभकामना अस्ति?

उत्तराणि– (*i*) काल: (*ii*) युगादि पर्वण: (*iii*) कालस्य (*iv*) कालस्य

www.dreamtopper.in